अर्जुन ने धनुर्विद्या में प्रवीणता प्राप्त करने के लिए गांडीव नाम के धनुष की खोज की । उसे कई आश्रमों और गुरुकुलों में परीक्षा देने के बाद भी धनुष नहीं मिला । आखिरकार महाराज द्रौपद की यज्ञ यात्रा में शामिल होने पर गांडीव धनुष के धारक से मिला जिस ने अर्जुन से पराधीन होकर धनुष प्रदान करने की शर्त रखी । अर्जुन ने उस शर्त को पूरा कर दिया और गांडीव धनुष प्राप्त कर लिया ।